NALANDA OPEN UNIVERSITY

Course : M.A Psychology, Part-II

Paper : Paper-XII

Prepared by : Dr. (Prof.) Prabha Shukla
Retd. Professor of Psychology, Patna University and
Chief Co-ordinator, School of Social Sciences,
Nalanda Open University

Topic : वैयक्तिक भिन्नता : स्वरूप, प्रकार, कारण तथा विधियाँ
(Individual differences : Nature, Types, Causes and Methods)

वैयक्तिक भिन्नता : स्वरूप, प्रकार, कारण तथा विधियाँ
(Individual differences : Nature, Types, Causes and Methods)

2.1 परिचय (Introduction)

प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से एक-दूसरे से भिन्न होता है। वैयक्तिक भिन्नता के बारे में जानने से पहले 'भिन्नता' (Variation or difference) के बारे में जानना जरूरी है। संसार की सभी रचना चाहे जड़ हो या चेतन, ईश्वर ने उन्हें भिन्न-भिन्न बनाया है। पृथ्वी पर कई प्रकार की मिट्टी, पत्थर, पहाड़ इत्यादि पाये जाते हैं जो एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। पानी का एक ही रंग होता है, पर अलग-अलग जगहों में उसका स्वाद एवं विशेषता अलग-अलग होती है। हमार चारों ओर तरह-तरह की वनस्पति, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी देखने को मिलते हैं। वनस्पतियों में कुछ को हम फूल कहते हैं, कुछ को फल एवं कुछ छोटे पौधों की श्रेणी में आते हैं। अर्थात् जड़ के अलावा चेतन (living objects) प्राणियों में भी भिन्नता-विभिन्नता पायी जाती है। ये सभी अपनी विशेषताओं के कारण एक-दूसरे से भिन्न हैं। पशु-पक्षी में एक प्रजाति के होते हुए भी इनमें विभिन्नताएँ पायी जाती हैं। जैसे–कुत्ता निश्चित रूप एवं गुण के कारण कुत्ता है और अपने आकार प्रकार एवं गुण के कारण गाय, गाय है और भैंस, भैंस। सारांश यह है कि सभी जड़ (non-living) और चेतन (living) प्राणी अपने स्वभाव, आकृति, विशेषता एवं गुण के कारण एक-दूसरे से भिन्न हैं।

मानव (human being), ईश्वर की अद्‌भुत रचना है। प्रत्येक व्यक्ति कद, आकार, हावभाव एवं असंख्य ऐसे शारीरिक गुणों से युक्त होता है, जो उसके व्यक्तित्व एवं व्यवहार को एक-दूसरे से भिन्न बनाते हैं। हममें से कुछ स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त होते हैं और कुछ कमजोर एवं चिड़चिड़े। कुछ के बाल काले होते हैं तो कुछ के भूरे। कुछ की आँखें नीली होती हैं तो कुछ की काली। कुछ हाजिर जबाव होते हैं तो कुछ झेंपू। एक हीं माता-पिता के बच्चे, या फिर एक समान जुड़वा बच्चे भी व्यवहार एवं योग्यता में एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का अपना व्यक्तित्व होता है, जो भिन्नता या विभिन्नता के स्वरूप में अपना योगदान देता है।

2.2 वैयक्तिक भिन्नता का स्वरूप (Nature of Individual differences)

मनुष्य के विकास में सभी क्रियाएँ प्राय: समान होती है, पर सभी तरह के विकास एक जैसे नहीं होते। उदाहरण के लिए बुद्धि विकास तो सभी बालकों में होता है, पर सबकी बुद्धि एक जैसी नहीं होती। एक परिवार के सदस्यों के बीच भी लोगों का रंग रूप (appearance) ईच्छा (interest) योग्यता (ability) और स्वभाव (temprament) भिन्न भिन्न होता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि व्यक्तियों के बीच की भिन्नता जब उन्हें एक-दूसरे से अलग करती है और उन्हें विशिष्ट (unique) बनाती है, उसे वैयक्तिक भिन्नता कह सकते हैं। "The differences among individuals that distinguish or seperate them from one another and make one a unique individual in oneself may be termed as individual differences." (Raber 1984, P-351) Carter B. Good (1959–P. 172) के अनुसार "व्यक्तियों के

बीच की भिन्नता या विभिन्नता, व्यक्ति की किसी एक विशेषता या कई विशेषताओं पर निर्भर करती है।" उदाहरण के लिए A, B से अधिक लम्बा है। A, B से अधिक लम्बा हीं नहीं, बल्कि एक अच्छा खिलाड़ी और अच्छा धावक भी है। अधिक लम्बा होना A की एक विशेषता है। एक अच्छा फुटबॉल खिलाड़ी और अच्छा धावक (दौड़नेवाला) उसकी अन्य विशेषताएँ हैं। अत: वैयक्तिक भिन्नता ऐसी मनोवैज्ञानिक घटना का नाम है, जो उन शीलगुणों एवं विशेषताओं पर बल डालता है जिसके कारण वैयक्तिक जीव भिन्न होते दिखते हैं।

वैयक्तिक भिन्नता दो प्रकार की होती है— व्यक्ति के अन्दर की विभिन्नता (differences within the person) जिसे अंत:वैयक्तिक भिन्नता भी कहते हैं। एक हीं शीलगुण का प्रदर्शन व्यक्ति के कार्यों में अलग-अलग होता है। उदाहरण स्वरूप ईमानदारी या कार्यकुशलता पर अच्छा भाषण देनेवाला नेता, उन्हीं तथ्यों को अपने जीवन में उपयोग करे, ऐसा जरूरी नहीं है। दूसरे तरह की विभिन्नता को अन्तर वैयक्तिक विभिन्नता (Intra Individual differences) कहते हैं। इस तरह की भिन्नता के कारण एक व्यक्ति दूसरे से लम्बा, गोरा, मोटा, पतला, बुद्धिमान या मंदबुद्धि का होता है।

स्किनर (Skinner) (1962) के अनुसार कोई भी शीलगुण (trait) दो व्यक्तियों या समूह में समान नहीं पाया जाता। अगर शीलगुण के आधार पर समूह का अध्ययन करें तो बहुत कम लोग होंगे जिनमें वह शीलगुण कम होगा और कुछ हीं लोगों में वह शीलगुण बहुत अधिक होगा। उदाहरण के लिए एक समूह के लोगों में इमानदारी कितनी है, इस शीलगुण का परीक्षण करें तो बहुत कम लोग भयंकर बेईमान होंगे और बहुत कम लोग अति ईमानदार। ज्यादातर लोग मध्यम गुण के होंगे जिनकी बेईमानी और ईमानदारी उनकी जरूरतों के साथ उनके शीलगुणों का निर्णय करती है।

भिन्नता, परिपक्वता (maturation) के कारण भी आती है। एक ही उम्र के दो बच्चों का शारीरिक विकास अलग-अलग होता है। वातावरण के प्रभाव के कारण भी वैयक्तिक भिन्नता स्पष्ट दिखायी देती है। जहाँ ठंढ़ अधिक पड़ती है वहाँ के लोग गोरे और फुर्तीले होते हैं। जहाँ बहुत गर्मी पड़ती है वहाँ के लोग काले एवं आलसी होते हैं। इसके अलावा, एक क्षमता रखने वाले दो बच्चे या जुड़वा बच्चे का व्यवहार अलग-अलग हो सकता है। जुड़वा बच्चों का शीलगुण एक हो सकता है, पर, अगर एक को माता-पिता विशेष स्नेह मिलता है और दूसरे को उपेक्षा एवं तिरस्कार तो इसका असर निश्चित रूप से उनके व्यवहार एवं क्षमता पर पड़ेगा। फलस्वरूप दूसरे बच्चे का मानसिक स्वास्थ्य एक-दूसरे से भिन्न होगा।

वैयक्तिक भिन्नता आनुवंशिकता और वातावरण के प्रभाव के कारण भी पायी जाती है। बच्चा अपने वंश के खास शीलगुणों के साथ पैदा होता है। शान्त स्वभाव का होना, चतुर होना, व्यवसायिक क्षमता रखना इत्यादि वंशानुगत गुण है जो एक परिवार के लोगों में प्राय: पाया जाता है। जैसे—डाक्टर का बेटा डाक्टर ही बनना पसन्द करता है। नेता अभिनेता के बच्चे भी वही पेशा अपनाना चाहते हैं। पर कुछ शीलगुण अर्जित भी होते हैं। एक हीं परिवार के बच्चे अलग-अलग वातावरण में पलकर अलग-अलग शीलगुण अर्जित करते हैं। सिर्फ अनुवंशिकता के कारण विभिन्नता नहीं पायी जाती, न हीं सिर्फ वातावरण के कारण। दोनों के मिले-जुले प्रभाव के कारण हीं विभिन्नता परिलक्षित होती है।

वैयक्तिक भिन्नता का दायरा बहुत हीं विस्तृत है। मनुष्य में पायी जाने वाली वैयक्तिक भिन्नता को मुख्यतया दो भागों में बाँटा गया है। शारीरिक या शरीर क्रिया में विभिन्नता (physical or physiological

diffences) और मनोवैज्ञानिक विभिन्नता (psychological differences) शारीरिक विभिन्नता हमारे शरीर की बनावट पर निर्भर करती है, पर मनोवैज्ञानिक भिन्नता हमारी बौद्धिक (intellectual potentialities) क्षमता योग्यता (ability), अभिरूचि (interest) मनोवृत्ति (attitude) अभिक्षमता (aptitude) सामाजिक (social) संवेगात्मक (emotional) एवं नैतिक (moral) विकास पर निर्भर करती है।

2.3 वैयक्तिक भिन्नता के प्रकार या क्षेत्र (Kinds or Areas of Individual Differences)

2.3.1 शारीरिक विकास में विभिन्नता (Physical Growth and Development)—वैयक्तिक भिन्नता का सबसे पहला उदाहरण शारीरिक विकास की क्रिया है। विकास के दो सोपान होते हैं—एक जन्म से 3 वर्ष की आयु तक और दूसरा 3 से 6 वर्ष की आयु तक। इस अवस्था में बालक का शारीरिक विकास, बड़ी तेजी से होता है। पर, अगर उचित भोजन, निद्रा, पालन-पोषण साफ सफाई में अन्तर होता है तो दो बच्चों के शारीरिक विकास पर असर पड़ता है और शारीरिक विकास में भिन्नता पायी जाती है।

2.3.2 मानसिक विकास में विभिन्नता (Differences in Mental growth)—उम्र के साथ-साथ मानसिक विकास होता है, पर मानसिक विकास की गति में भी व्यक्तिगत भिन्नताएँ पायी जाती हैं। बच्चे का मानसिक विकास उनकी बुद्धि के द्वारा निर्धारित होता है। फ्रीमैन तथा फ्लोरी 1967 (Freeman and Flory) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह सिद्ध किया कि बुद्धि स्तर पर भिन्नता के कारण बच्चे का मानसिक विकास अलग-अलग होता है। बच्चे में बुद्धि का विकास शैशवावस्था में ही होने लगता है, पर एक हीं आयु ने भिन्न-भिन्न बच्चों के बौद्धिक स्तर में अन्तर स्पष्ट दिखायी देता है। मानसिक विकास या बुद्धि के कारण हीं कुछ बच्चे प्रखर होते हैं, कुछ सामान्य और कुछ मंदबुद्धि। कैटेल (Catell) एवं स्पीयरमैन (Spearman) हार्न (Horn) और गार्डेनर (Gardener) ने अध्ययनों द्वारा यह सिद्ध किया है कि बुद्धि के क्षेत्र में वैयक्तिक भिन्नता बहुत अधिक पायी जाती है। उनके अनुसार बुद्धि समस्याओं को सुलझाने, किसी भी चीज को ग्रहण करने और नये कौशल को सीखने की क्षमता है। इन्हीं क्षमताओं के आधार पर हीं बच्चे एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। कभी-कभी मानसिक विकास में अन्तर वातावरण के कारण भी आती है। परिवार, पड़ोस, स्कूल इत्यादि कई ऐसे कारक होते हैं जो बच्चे के मानसिक विकास पर प्रभाव डाल सकते हैं।

2.3.3 सांवेगिक विभिन्नता (Differences related to emotions)—संवेग का शाब्दिक अर्थ है उत्तेजित कर देना। अलग-अलग मनोवैज्ञानिकों ने इसे अलग-अलग परिभाषित किया है। वुडवर्थ (Woodworth-1949, P. 344) के अनुसार, 'संवेग शरीर की आंदोलित अवस्था है।" "प्रत्येक संवेग एक अनुभूति है और प्रत्येक संवेग उसी समय एक गत्यात्मक तत्परता है।" (Each emotion is afeeling and each is, at the same time a motor set.) संवेग की अवस्था में कभी-कभी अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ भी पायी जाती हैं।

2.3.4 सामाजिक विकास में विभिन्नता (Differences related to socialization and social behaviour)—व्यक्ति द्वारा व्यवहार के परम्परागत प्रतिमानों को ग्रहण करने की प्रक्रिया को समाजीकरण कहते हैं (V. V. Akolkar) समाजीकरण के कारण ही व्यक्ति तौर तरीके, शिष्टाचार, बोलचाल उठना-बैठना आदि सामाजिक व्यवहार सीखता है। इसी आधार पर, व्यक्ति का समाजीकरण भी उन्हें एक दूसरे से भिन्न बनाता है। बच्चे का व्यक्तित्व बहुत कुछ उनके सामाजिक पर्यावरण पर निर्भर करता है। सभी बच्चों

का समूह–व्यवहार (group behaviour) एक तरह का नहीं होता। कोई मिलनसार होता है और समूह में अपने आपको अच्छी तरह अभियोजित कर लेता है। कुछ लोग संकोची होते हैं और अपने आपको अलग–अलग कर लेते हैं। कुछ व्यक्तियों में नेतृत्व गुण होते हैं और कुछ सामाजिक कार्यों में भाग लेने से भी घबड़ाते हैं। उनके नैतिक और चारित्रिक गुणों में भी विभिन्नता पायी जाती है। इन विभिन्नताओं के कारण उनके व्यक्तित्व विकास में भी विभिन्नता पायी जाती है।

2.3.5. अभिरूचि में विभिन्नता (Differences in interest)—अभिरूचि एक ऐसी धुरी है जो सीखने और सिखाने दोनों क्रियाओं का संचालन करती है। व्यक्ति की अभिरूचि जिसमें होती है, वह उस विषय को अच्छी तरह सीख लेता है और उसे जीवन पर्यन्त याद रखता है। क्रो एण्ड क्रो (Crow & Crow) के अनुसार 'अभिरूचि वह प्रेरणात्मक शक्ति है जो हमें किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा क्रिया की ओर आकर्षित करती है। ('Interest refers to motivating force that impell as to attend is a person a thing or an activity). व्यक्तिगत अभिरूचि के कारण हम समूह में भी एक व्यक्ति, वस्तु अथवा क्रियाओं के प्रति आकर्षित होते हैं। अभिरूचि में भिन्नता के कारण वैयक्तिक भिन्नता स्पष्ट दिखायी देती हैं। अपने चारों ओर के वातावरण में इस तरह के कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। किसी की रूचि विज्ञान में होती है तो किसी की साहित्य में। कोई संगीतज्ञ बनना चाहता है तो कोई चित्रकार। प्रत्यक्ष उदाहरण तो T.V. show के दौरान देखने को मिलता है जहाँ किसी की रुचि क्रिकेट में है तो किसी की कार्टून चैनल में। कुछ लोग अन्ताक्षरी या संगीत कार्यक्रम देखना पसन्द करते हैं तो कुछ लोगों को फिल्में या सीरियल पसन्द है। संगीत प्रोग्राम में भी किसी को Z-TV का प्रोग्राम पसन्द है तो किसी को 'सोनी टीवी का। सबकी रूचियाँ भिन्न होती है और यह भिन्नता उनके वैयक्तिक भिन्नता का कारण होती है।

2.3.6. मनोवृत्ति में भिन्नता (Differences in Attitude)—मनोवृत्ति एक विशेष प्रकार के भाव को कहते हैं। मनोवृत्ति एक ऐसी प्रवृत्ति है, जिसके कारण व्यक्ति चाहे किसी अवस्था में हो किसी व्यक्ति के बारे में एक खास तरह का व्यवहार करता है। अपनी मनोवृत्ति के कारण ही हम किसी वस्तु या व्यक्ति के बारे में सकारात्मक (positive) या नकारात्मक (negative) विचार रखते हैं। उदाहरण स्वरूप हिन्दुओं का मुसलमानों के प्रति एक विशेष प्रकार का भाव होता है। किसी भी समूह या जाति विशेष के प्रति हमारी मनोवृत्ति हमारे गत अनुभव (past experience) पर आधारित होती है। उस व्यक्ति में वे गुण या दोष होया नहीं हम अपनी मनोवृत्ति के कारण ही किसी व्यक्ति को पसन्द या नापसन्द करते हैं। यह किसी भी व्यक्ति, समूह अथवा राष्ट्र के प्रति हो सकती है।

2.3.7. अभिक्षमता में भिन्नता (Differences in aptitude)—अभिवृत्ति मानव क्षमता का प्रमुख अंश है। व्यक्ति की अभिक्षमता के कारण, व्यवहार में एक विचित्र प्रकार की समानता, असमानता, एकरसता एवं विभिन्नता पायी जाती है। अभिक्षमता विशेषताओं के उस समूह को कहते हैं, जिसे व्यक्ति अपने विशेष ज्ञान को ग्रहण करने की क्षमता (acquire) संतुलित प्रतिक्रिया एवं कौशल द्वारा प्रदर्शित करता है। अभिक्षमता के कारण ही कोई व्यक्ति संगीतकार, कुशल वक्ता या यांत्रिक कुशलता प्राप्त करता है। अभिक्षमता में भिन्नता के कारण हीं बच्चे की प्रतिभा का पता लगाया जा सकता है, उसे सही शिक्षा देकर अभ्यास के द्वारा सही मार्गदर्शन किया जा सकता है। पहले माता–पिता यह तय करते थे कि भविष्य में बच्चे को क्या

बनाना है। शिक्षा मनोविज्ञान की सहायता से अब शिक्षक बच्चे की छुपी अभिक्षमता का पता लगाते हैं और उसी के आधार पर उन्हें प्रशिक्षण देकर निपुण बनाने की चेष्टा करते हैं। किसी भी बेसुरे को संगीतकार नहीं बनाया जा सकता। उनकी अभिक्षमता की विभिन्नता को परख कर उन्हें शैक्षिक एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण (training) दी जा सकती है।

2.3.8 मूल्यों में विभिन्नता (Differences in values)—हमारे जीवन दर्शन में कई मूल्यों का समावेश होता है। इनमें से कुछ सामाजिक होते हैं, कुछ नैतिक एवं आध्यात्मिक, कुछ वातावरण जनित एवं परिस्थितिवश होते हैं। दूसरे शब्दों में, हम अपनी जरूरतों के अनुसार शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से जुड़े होते हैं। जीवन के मूल्यों में भी जरूरतों के आधार पर भिन्नता पायी जाती है। हम उसी वस्तु को महत्व देते हैं जिसकी हमें आवश्यकता होती है और अपने मूल्यों में materialistic रहते हैं। एक बेरोजगार की जिन्दगी में अर्थोपार्जन हीं उसका वास्तविक मूल्य है, समाज सुधार नहीं। मानवीय एवं आध्यत्मिक मूल्य पूरे विश्व में एक समान है।

2.3.9 आकांक्षा में भिन्नता (Differences in level of aspiration)—आकांक्षा इच्छापूर्ति की कुंजी है जो जीवन में प्रगति एवं सफलता लाती है। आकांक्षा के बिना कुछ भी पाना असंभव है। प्रत्येक व्यक्ति में एक प्रबल आन्तरिक इच्छा या आकांक्षा (inner urge) होती है, जो उन्हें प्रगति की ओर अग्रसर करती है। आकांक्षा तीव्र और शिथिल दोनों प्रकार की होती है। एक ही परिवार में एक भाई की आकांक्षा, एक सफल व्यवसायिक बनकर खूब पैसा कमाने की होती है तो दूसरा भाई अपनी साधारण सी नौकरी से संतुष्ट रहता है। आकांक्षा में एक संतुलन होना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में, इच्छाओं की पूर्ति एवं आकांक्षा के स्तर में एक सामंजस्य होना चाहिए। एक व्यक्ति की आंतरिक क्षमता से ऊपर आकांक्षा रखना घातक भी हो सकता है। इसका उदाहरण हम अपने चारों ओर देखते हैं। पैसा कमाने की तीव्र आकांक्षा से व्यक्ति कई अनैतिक एवं असामाजिक कार्य करने लगता है। किसी लक्ष्य या वस्तु को पाने की तीव्र आकांक्षा हीं एक व्यक्ति को दूसरे से भिन्न बनाती है।

2.3.10 आत्म-धारणा में भिन्नता (Differences in self concept)—मनोवृत्ति की समाग्रता (totality of attitudes) व्यवहार सम्बन्धी निर्णय एवं मूल्य तथा व्यक्ति की योग्यता को आत्म धारणा कहते हैं। "The tatality of attitudes, judgement and values of an individual relating to his behaviour, abilities and qualities may be referred to his self concept." अपने इन्हीं गुणों के कारण व्यक्ति अपने प्रति एक धारणा बनाता है। आत्मा धारण प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग पायी जाती है। व्यक्ति अपने अनुभवों एवं मूल्यों के आधार पर अपने बारे में निर्णय लेता है और अपने स्वयं का निर्माण करता है। प्रत्येक व्यक्ति के अनुभव और निर्णय की शक्ति अलग होती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा धारण या self concept भी भिन्न होता है।

2.3.11 उपलब्धियों में विभिन्नता (Difference in achievement)—प्रत्येक व्यक्ति अपनी उपलब्धियों के आधार पर एक-दूसरे से भिन्न होता है। किसी भी शिक्षण में चाहे वह professional हो या occupational एक व्यक्ति अपनी उपलब्धियों के अनुसार एक-दूसरे से भिन्न होता है। एक हीं उम्र, समान बुद्धि एवं एक ही कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि एक समान नहीं होती। एक हीं अवस्था

में एक तरह के शिक्षण के बावजूद भी, कुछ बच्चों की उपलब्धि अधिक होती है, और कुछ की अत्यन्त कम। ज्यादातर बच्चे सामान्य श्रेणी के होते हैं। स्किनर, 1962 (Skinner-1962) तथा बेले (Bayley-1991) ने इस दिशा में कई अध्ययन किये और पाया कि उनकी उपलब्धि में भिन्नता मुख्यतया उनकी अभिरूचि प्रेरणा और अभ्यास में कमी के कारण होती है। कभी-कभी उपलब्धि में भिन्नता का स्वरूप बिल्कुल अलग (unique) होता है। एक बच्चा सभी कठिन विषयों में अच्छे अंक लाता है, पर हिन्दी में (जो उसकी मातृभाषा है) कमजोर होता है। उसकी रूचि हिन्दी में नहीं है इसलिए इस विषय में उसकी उपलब्धि कम है।

2.3.12 व्यक्तित्व विभिन्नता (Differences in personality development)—व्यक्ति के साक्षेप रूप से (relatively) अनूठे (unique) एवं स्थिर व्यवहार (stable pattern of behaviour) विचार (thought) एवं संवेग (emotion) को व्यक्तित्व कहते हैं। (Baron 1993) समाज में व्यक्तित्व में विभिन्नता का प्रत्यक्षण सभी कोई कर सकता है। शीलगुणों के आधार पर कुछ लोग अंतर्मुखी होते हैं तो कुछ बहिर्मुखी। किसी में कुशल नेतृत्व के गुण पाये जाते हैं तो कुछ में पद चिह्नों पर चलने (follower) के। कुछ लोगों में ऐसे विशेष शीलगुण होते हैं जो उन्हें विख्यात बनाते हैं। Cattell (1945) ने इसे कार्डिनल गुण (Cardinal trait) का नाम दिया है। महात्मा गाँधी के जीवन की सादगी एवं दृढ़ निश्चय ने उन्हें विश्व विख्यात बनाया।

इसके अलावा उनके ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक क्षमताओं में भी विभिन्नता पायी जाती है। पढ़ने की शैली में भी भिन्नता पायी जाती है। शिक्षा मनोविज्ञान इन भिन्नताओं को ध्यान में रखकर उचित शिक्षा पद्धति का निर्माण कर, सीखने वाले को उचित परामर्श देता है। इतना तो तय है कि वैयक्तिक भिन्नता का प्रभाव शिक्षार्थी के व्यवहार एवं व्यक्तित्व पर पड़ता है पर व्यक्ति कितनी मात्रा में एक-दूसरे से भिन्न है ? ये विभिन्नताएँ जनसंख्या में कैसे वितरित होती है ? इत्यादि बहुत से प्रश्न उभर कर सामने आते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने अपने प्रयोगों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि विभिन्नताओं का वितरण normal probability curve के अनुसार होता है। व्यक्ति की लम्बाई, वजन, सुन्दरता, बुद्धि और व्यक्तित्व के दूसरे अन्य गुणों का वितरण समाज में समान रूप से ही होता है। कुछ हीं लोग विशिष्ट श्रेणी के होते हैं और बहुत कम लोग निम्न श्रेणी के।

2.4 वैयक्तिक भिन्नता के कारण (Causes of Individual differences)

पूरे विश्व में मानव की एक तरह बनावट होती है। विश्व में कहीं भी मानव के दो नाक या तीन कान (सामान्य व्यक्ति के) नहीं होते। उनकी नाक मोटी, चिपटी, तीखी या सुडौल हो सकती है पर यह विभिन्नता बनावट या मात्रा के आधार पर होती है। शरीर की संरचना, बौद्धिक क्षमता संवेग भाव शारीरिक और मानसिक जरूरतें सभी भिन्न होते हैं पर यह भिन्नता सिर्फ मात्रा (quantity) के कारण होती है। यह मात्रा की भिन्नता कई कारणों से आती है। ये विभिन्नताएँ या तो अनुवांशिक होती हैं या वातावरण जनित। वंशानुगत भिन्नताएँ एक परिवार में, समाज में और राष्ट्र में एक तरह की पायी जाती हैं। एक परिवार में माता-पिता की आँखें भूरी हैं तो उनके बच्चों में भी यह गुण पाया जाता है। अमेरिका के लोग लम्बे चौड़े और गोरे होते हैं वहीं अफ्रीका के लोग गहरे काले होते हैं, उनके बाल घुंघराले एवं होठ मोटे होते हैं। वैयक्तिक भिन्नता के कई कारण है।

2.4.(a)अनुवांशिकता (Heredity)---कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार वैयक्तिक भिन्नता अनुवांशिक होती है। यह अक्सर देखा गया है कि एक वंश के लोग अपने जन्मजात गुणों एवं विशेषताओं के कारण एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। ये जन्मजात गुण, योग्यता, विशेषता जो अनुवांशिकता के कारण आती है, वह व्यक्ति के प्रगति एवं विकास के रास्तों का निर्धारण करती है। यह पाया गया है कि अच्छे संस्कार वाले माता-पिता की सन्तानें भी संस्कारी होती है। बुद्धिमान एवं उच्च शीलगुणों से सम्पन्न माता-पिता के बच्चों में भी वैसे ही गुण पाये जाते हैं। पर अपराधी शीलगुण वाले माता-पिता की सन्तानें वही शीलगुणों के साथ जन्म लेती हैं। दूसरे शब्दों में, अनुवांशिकता बच्चे के विकास एवं उनके व्यक्तित्व की कई दूसरी विशेषतायें तय करती हैं। अनुवांशिकता, बच्चों के बीच की भिन्नता को रंग-रूप, आँखें, त्वचा, आन्तरिक एवं बाह्य कार्य प्रणाली को प्रभावित करती है, साथ हीं अप्रत्यक्ष रूप से यौन (sex) बुद्धि (intelligence) और अन्य विशिष्ट योग्यताओं में भी भिन्नता लाती है।

2.4.(b) वातावरण (Environment)---वातावरण का प्रभाव भी वैयक्तिक भिन्नता पर पड़ता है। एक तरह की सुविधा और समान अवस्था में भी दो व्यक्तियों में भिन्नता पायी जाती है। अपने आन्तरिक एवं बाह्य वातावरण से जो उत्तेजना (stimulation) उन्हें मिलती है, वही उनकी विभिन्नता को निर्धारित करती है। वातावरण जनित उत्तेजना (Environmental stimulation) में भिन्नता का असर माता के गर्भ से ही आरंभ हो जाता है। गर्भ संपोषण एवं जन्म क्रिया का प्रभाव, प्रारंभिक वर्षों में माता-पिता का प्यार एवं सुरक्षा, विद्यालयों की अच्छी भूमिका, सामाजिक एवं वित्तीय स्तर (Socio-economic states) जाति, उपजाति, राष्ट्रीयता, माता-पिता की शिक्षा, भाई-बहनों के बीच का सम्बन्ध और भी कई प्रकार के संवेगात्मक, सामाजिक मानसिक वातावरण जनित प्रभाव, बच्चों के व्यक्तित्व, चारित्रिक एवं व्यवहार सम्बन्धी विशेषताओं में विभिन्नता लाते हैं। Galton (1892) के अनुसार "वातावरण में उपस्थित किसी भी प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक विभन्नता वैयक्तिक भिन्नता का कारण होती है।" निष्कर्ष यह है कि वैयक्तिक भिन्नता न तो सिर्फ अनुवांशिक होती है न हीं सिर्फ वातावरण जनित बल्कि दोनों के मिलेजुले प्रभाव के कारण होती है।

2.4.(c) प्रजाति एवं राष्ट्रीयता (Race and Nationality)---प्रजाति एवं राष्ट्रीयता वैयक्तिक भिन्नता का प्रमुख स्त्रोत है। भारत में कश्मीरी लोग जहाँ गोरे चिट्ठे होते हैं, वहीं चेन्नई या केरल के लोग गहरे काले। असमिया या नेपाली लोगों के चेहरे की बनावट बिल्कुल भिन्न होती है। चीनी, जापानी लोगों की नाक चिपटी होती है और अफ्रीकन लोगों के चेहरे की बनावट बिल्कुल अलग होती है। शारीरिक भिन्नता केअलावा उनके मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास में भी कुछ न कुछ भिन्नता पायी जाती है। एक जनजाति (trival people) के बालकों की बुद्धि एवं शीलगुण, दूसरी जनजाति या सामान्य लोगों के बच्चों से भिन्न होती है। राष्ट्रीयता का प्रभाव की वैयक्तिक भिन्नता पर पड़ता है। जापानी लोग मेहनती एवं जुझारू होते हैं, नेपाली लोग साहसी तथा अमेरिकन लोग या ब्रिटिश लोग कूटनीतिज्ञ होते हैं। उनके बच्चों का शीलगुण दूसरे राष्ट्र के बच्चों से बिल्कुल भिन्न होता है।

2.4.(d) आयु एवं बुद्धि (Age and Intelligence)- आयु के आधार पर भी वैयक्तिक भिन्नता की विवेचना कर सकते हैं। एक पाँच साल के बच्चे एवं पच्चीस साल के वयस्क के व्यवहार में भिन्नता आयु के कारण स्पष्ट देखी जा सकती है। दोनों के अंग प्रत्यंग एक ही होते हैं, पर आयु के कारण शारीरिक विकास में भिन्नता पायी जाती है। जैसे-जैसे आयु बढ़ती है, उनकी बुद्धि में भी भिन्नता आती है।

उनका व्यवहार अलग-अलग होने लगता है। आयु एवं परिपक्व बुद्धि के कारण बड़े लोग अपने व्यवहार को हालात के अनुसार संतुलित कर लेते हैं, पर बच्चा सच, झूठ सबकुछ सबके सामने स्पष्ट बोल देता है।

2.4.(e) लिंग (Sex)—लिंग के कारण आयी वैयक्तिक भिन्नता का प्रत्यक्षण समाज में सभी कर सकते हैं। लड़के और लड़कियों की शारीरिक बनावट बिल्कुल भिन्न होती है। शारीरिक बनावट ही नहीं, शारीरिक क्षमता एवं स्वभाव के कारण दोनों में भिन्नता पायी जाती है। लड़के जहाँ शारीरिक रूप से मजबूत आक्रामक एवं अपने संवेगात्मक व्यवहार को अच्छी तरह नियंत्रित कर लेते हैं वहीं लड़कियाँ कमजोर, नाजुक एवं अति संवेदनशील होती हैं।

वैयक्तिक भिन्नता के और भी कई कारण हैं। अगर एक परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी है, परिवार के सदस्य शिक्षित हैं तो उस परिवार के बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास अच्छा होता है। जिस परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर है, शिक्षा का अभाव है, उस परिवार के बच्चे शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर तो होते हीं हैं, उनका व्यवहार भी बिल्कुल अलग होता है। वैयक्तिक भिन्नता के जितने भी कारण हैं वे या तो अनुवांशिक होते हैं या वातावरण जनित। दोनों कारक (factors) वैयक्तिक भिन्नता की विवेचना करते हैं। सिर्फ अनुवांशिकता या वातावरण दोनों अलग-अलग वैयक्तिक भिन्नता का कारण नहीं बनते, बल्कि यह भिन्नता दोनों के मिलेजुले प्रभाव के कारण आती है।

संक्षेप में, व्यक्ति योग्यता, क्षमता और अन्य चारित्रिक विशेषताओं के कारण एक-दूसरे से भिन्न होते हैं और यही भिन्नता शिक्षा के लिए लाभकारी होती है। वैयक्तिक भिन्नता का पता लगाकर शिक्षक बच्चों की योग्यता, क्षमता, ईच्छा, विचार, अभिक्षमता इत्यादि कई गुणों के आधार पर बच्चों को उचित परामर्श एवं निर्देशन देकर उनकी कार्य क्षमता बढ़ा सकते हैं। एक ही पाठ्यक्रम से सभी बच्चे समान रूप से लाभान्वित नहीं होते। वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर उनका अलग समूह बनाया जा सकता है, जिससे वे अपनी रूचि एवं योग्यता के आधार पर अपना पाठ्यक्रम चुन सकें। उसका उदाहरण हमें इंजीनियरिंग की पढ़ाई में स्पष्ट दिखायी देता है जहाँ उत्तीर्ण (competed) सारे शिक्षार्थियों को counselling के द्वारा विभिन्न क्षेत्र (electronic computer, civil mechanical etc.) चुनने की सलाह दी जाती है।

2.5 वैयक्तिक भिन्नता के अध्ययन की विधियाँ (Methods of studying individual differences)

वैयक्तिक भिन्नता को मापने की कई विधियाँ हैं। वैयक्तिक भिन्नता बुद्धि के स्तर पर सबसे ज्यादा परिलक्षित होती है। साधारणतया ज्ञान प्राप्ति एवं समस्या समाधान की योग्यता को बुद्धि कहते हैं। हम उसी व्यक्ति को बुद्धिमान कहते हैं जिसमें जीवन की समस्याओं से जूझने की शक्ति औरों से ज्यादा होती है। भिन्नता मापने की पहली विधि बुद्धि परीक्षण है।

2.5.(a) बुद्धि परीक्षण (Intelligence Test)—कुछ अध्ययनों के अनुसार बुद्धि जन्मजात योग्यता है। पर कुछ लोग इसे वातावरण जनित (environmental) भी मानते हैं। बुद्धि एक ऐसी मानसिक योग्यता है, जो एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से भिन्न बनाती है। इसके प्रभाव से ही व्यक्ति एक दूसरे व्यक्ति से बौद्धिक स्तर पर उत्तम, मध्यम या निम्न पाया जाता है। सीखने की तीन विधियाँ होती हैं—(i) सीखने की

क्षमता, (ii) सीखे गये विषय का सम्पूर्ण ज्ञान, (iii) वातावरण में उत्पन्न नयी अवस्थाओं एवं समस्याओं में अपने आपको समायोजित करने की योग्यता (the capacity to learn; the total knowledge of a person has acquired; and the ability to adopt successfully to new situations and to the environment in general—Anita Woolfolk—Page-107).

बुद्धि, बुद्धि परीक्षण के द्वारा हीं मापा जा सकता है। बुद्धि की अलग-अलग विशेषताओं को मापने के लिए कई बुद्धि परीक्षण हैं जिनमें बिने-साईमन-मापनी (Binet-Simon Test), वेश्लर स्केल, (Weschler scale) गुडइयर का ड्रॉ-ए मैन टेस्ट (Draw a man test) इत्यादि प्रमुख हैं। सबसे पहला बुद्धि परीक्षण बिने-साइमन (Binet-Simon) ने विकसित किया जिसे टरमन (Terman) ने संशोधित कर बुद्धि उपलब्धि का वैज्ञानिक सूत्र दिया। इस सूत्र के अनुसार,

बुद्धि उपलब्धि $= \frac{\text{मानसिक आयु (M.A.) Mental Age}}{\text{तैथिक आयु (C.A.) Chronological Age}} \times 100$ होगी। अर्थात् किसी बच्चे की मानसिक आयु अगर 12 साल है और उसकी वास्तविक आयु 10 साल है तो इस सूत्र के अनुसार $\frac{12}{10} \times 100 = 120$ बच्चे की बुद्धि उपलब्धि 120 होगी। बुद्धि लब्धि के मान (values of I.Q.) के अनुसार इसकी बुद्धि सामान्य से ऊपर है। अशिक्षित लोगों की बुद्धि परीक्षण के लिए भी कई परीक्षण बनाये गये हैं जिसे बुद्धि उप परीक्षण कहते हैं।

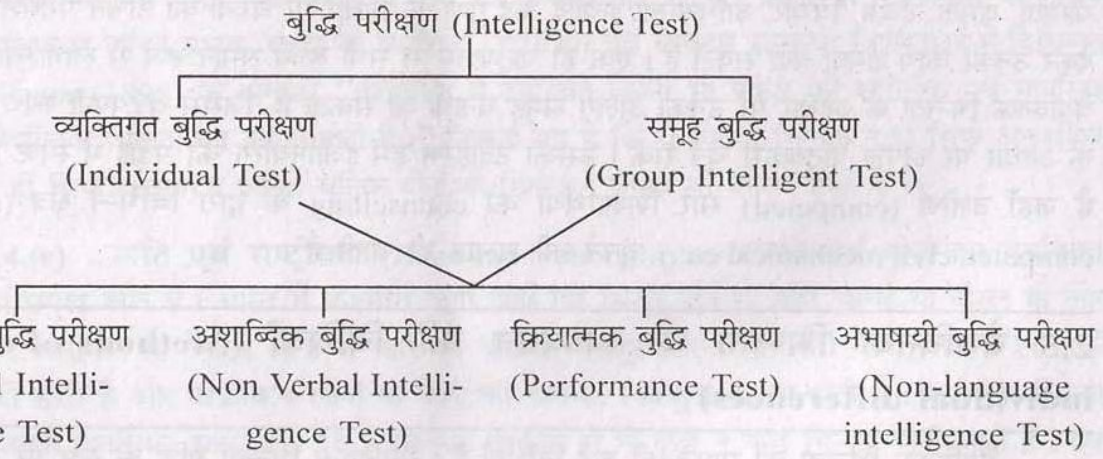

इन सभी परीक्षणों के उपयोग से वैयक्तिक विभिन्नता बिल्कुल स्पष्ट होती है। बौद्धिक भिन्नता को मापकर बच्चों की उचित शिक्षा का निर्धारण कर सकते हैं, इनकी योग्यता को बढ़ाने में योगदान कर सकते हैं और शिक्षा मनोविज्ञान की सहायता से भविष्य के लिए उचित निर्देशन दे सकते हैं।

2.5.(b) उपलब्धि परीक्षण (Achievement Test)—"उपलब्धि परीक्षण के द्वारा ज्ञान या कौशल के किसी विशेष क्षेत्र में व्यक्ति की अर्जित निपुणता की वर्तमान स्थिति की माप होती है।" (Achievement tests measure the current states of individuals with respect to acquired proficiency in given areas of knowledge and skills. (Gay, 1980, P-177) उपलब्धि परीक्षण एक

मानकीकृत (standardized) विधि पर आधारित होता है। एक समय, एक समान वातावरण में निष्पक्ष विधि से बच्चों के पाठ्यक्रम से सम्बन्धित परीक्षा ली जाती है और उस परीक्षा के बाद जो अंक मिलते हैं वह उनकी उपलब्धि होती है। इस उपलब्धि के आधार पर उनकी अर्जित निपुणता और योग्यता की जाँच होती है। इसी उपलब्धि से उनकी वैयक्तिक भिन्नता का भी पता लगता है। उपलब्धि परीक्षण के आधार पर छात्रों की क्षमता का मापन किया जा सकता है। अन्य बच्चों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। उनके बौद्धिक विकास के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है तथा उन्हें व्यक्तिगत एवं व्यवसायिक निर्देशन भी दिया जा सकता है। यही नहीं उपलब्धि के आधार पर परोक्ष रूप से शिक्षकों की शिक्षण प्रणाली की बैधता का भी पता लगाया जा सकता है।

2.5.(c) अभिक्षमता परीक्षण (Aptitude Test)—अभिक्षमता परीक्षण वह परीक्षण है, जो व्यक्ति के विशिष्ट क्षेत्र में किसी प्रवीणता या कौशल को ग्रहण करने की क्षमता का मापन करता है। किसी खास विषय में ज्ञान अभिरूचि एवं कुशलता आदि को विकसित करने की क्षमता को अभिक्षमता कहते हैं। दूसरे शब्दों में, किसी विशिष्ट क्षेत्र में व्यक्ति की प्रवीणता हीं अभिक्षमता है। फ्रीमैन (Freeman–1962) के अनुसार "अभिवृत्ति से तात्पर्य गुणों या विशेषताओं के ऐसे संयोग से होता है, जिससे विशिष्ट ज्ञान तथा संगठित अनुक्रियाओं द्वारा अर्जित किसी कौशल जैसे किसी भाषा बोलने की क्षमता, संगीतज्ञ बनने की क्षमता, यांत्रिक कार्य करना आदि को सीखने की क्षमता का पता चलता है। टुकमैन (Tuckman–1975) ने भी अभिक्षमता की परिभाषा कुछ इसी तरह की दी है। टुकमैन के अनुसार "क्षमताओं या अन्य गुणों के ऐसे संयोग को चाहे जन्मजात हो या अर्जित, ज्ञात हो अथवा अज्ञात, जिससे किसी क्षेत्र में प्रवीणता विकसित करने या व्यक्ति के सीखने की क्षमता का पता चलता हो, अभिवृत्ति कहते हैं।" इन परिभाषाओं से कई बातें स्पष्ट हो जाती है।

(i) 'अभिक्षमता (aptitude) व्यक्ति के अन्दर अंत:शक्ति होती है।' प्रत्येक व्यक्ति की अंत:शक्ति एक नहीं होती। अत: वे एक–दूसरे से भिन्न होते हैं।

(ii) 'यह अंत:शक्ति जन्मजात भी होती है और अर्जित भी'। अत: दोनों कारण किसी भी दो व्यक्ति में समान नहीं हो सकते।

(iii) यह किसी विशेष क्षेत्र में कौशलता (skill) या प्रवीणता (perfectness) अर्जित करने की क्षमता होती है। विशेष क्षेत्र में कौशलता या निपुणता ग्रहण करने पर भी सभी की क्षमता एक जैसी नहीं होती। गाना सीखने वाले प्रत्येक शिक्षार्थी एक बराबर निपुणता ग्रहण नहीं करता। अभिक्षमता परीक्षण के आधार पर व्यक्ति की क्षमता का पता लगाकर उस व्यक्ति के बारे में पूर्वानुमान लगाया जा सकता है कि भविष्य में यह कैसा निष्पादन कर पायेगा। अभिक्षमता परीक्षण एक तरह का संज्ञानात्मक परीक्षण (cognitive measures) जिसके आधार पर विशिष्ट क्षेत्र में व्यक्ति के निष्पादन (performance) के बारे में पूर्वकथन किया जाता है। इस परीक्षण के बाद वैयक्तिक भिन्नता का पता बड़ी आसानी से लगाया जा सकता है।

2.5.(d) व्यक्तित्व परीक्षण (Personality Test)—व्यक्तित्व परीक्षण, वैयक्तिक भिन्नता को मापने का सशक्त माध्यम है। व्यक्तित्व अपने आप में एक व्यापक शब्द है, जिसकी परिभाषा मनोवैज्ञानिकों ने अलग–अलग ढंग से की है। साधारणतया इसे हम बाह्य रंग–रूप से जोड़ते हैं। चूँकि बाह्य रंग रूप सभी का एक समान नहीं होता तो पहली भिन्नता यहीं से प्रारंभ हो जाती है। G.W. Allport के अनुसार व्यक्तित्व

व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तंत्रों का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है, जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करते हैं।" व्यक्ति के शीलगुण आपस में इस तरह से संगठित होते हैं कि उन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि वे आपस में अंतर्क्रिया करते हैं। इसके अलावा कई तत्व जैसे प्रेरणा (motive) आदत (habit) मनोवृत्ति (attitude) भाव (feeling) आदि मूल्यों (values) का भी समावेश होता है। अत: एक शीलगुण होने पर भी दो व्यक्तियों का व्यक्तित्व बिल्कुल भिन्न होता है। उनके व्यवहार, विचार, संवेग आदि बिल्कुल भिन्न होते हैं।

व्यक्तित्व मापने की मुख्यतया तीन विधियाँ हैं—(i) निर्धारण मापनी (rating scale), (ii) प्रक्षेपी विधियाँ (Projective techniques) और (iii) व्यक्तित्व आविष्कारिका (Personality Inventories) इन तीनों परीक्षणों के आधार पर वैयक्तिक भिन्नता को सही ढंग से मापा जा सकता है। यही नहीं एक तरह के शीलगुणों वाले व्यक्ति के व्यवहार में जो भिन्नता पायी जाती है, वह व्यक्तित्व परीक्षण के द्वारा ही संभव है।

शिक्षा मनोवैज्ञानिकों के लिए वैयक्तिक भिन्नता की जानकारी रखना अति आवश्यक है। इसकी सहायता से शिक्षक, वैयक्तिक भिन्नताओं के आधार पर बच्चों की क्षमताओं का सही मूल्यांकन कर, भविष्य के लिए उचित परामर्श एवं दिशा निर्देशन देने में सफल हो सकते हैं।

2.6 सारांश (Summary)

वैयक्तिक भिन्नता व्यक्तियों के बीच की एक विशेषता अथवा विशेषताओं के समूह में विभिन्नता को कहते हैं। वैयक्तिक भिन्नता शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार की होती है। व्यक्ति का रंग रूप, लम्बाई, मोटापा इत्यादि इसके शारीरिक स्वरूप को निर्धारित करते हैं तथा शीलगुण, योग्यता, संवेगात्मक व्यवहार, सामाजिक व्यवहार इत्यादि व्यक्ति की मानसिक भिन्नता से जुड़े हैं। वैयक्तिक भिन्नता अनुवांशिक एवं वातावरण जनित दोनों तरह की होती है। प्रजाति एवं राष्ट्रीयता, आयु एवं बुद्धि, आर्थिक स्थिति, शिक्षा आदि का प्रभाव वैयक्तिक भिन्नता पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। वैयक्तिक भिन्नता के कई प्रकार या क्षेत्र हैं जिनमें शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सांवेगिक विभिन्नता सामाजिक विभिन्नता भाषा विकास आदि प्रमुख हैं। वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर उपलब्धि में भिन्नता, ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक क्षमता में अन्तर, बुद्धि में भिन्नता आदि का पता लगाया जा सकता है। वैयक्तिक भिन्नता के अध्ययन की कई विधियाँ हैं जिनमें बुद्धि परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण संवेग परीक्षण अभिक्षमता परीक्षण एवं व्यक्तित्व परीक्षण इत्यादि प्रमुख हैं। ये परीक्षण विधियाँ व्यक्ति के व्यक्तित्व की विभिन्न योग्यताओं एवं विशेषताओं को मापकर उनका सही मूल्यांकन करती है।

शिक्षा के क्षेत्र में वैयक्तिक भिन्नता की जानकारी होना, अति आवश्यक है। शारीरिक एवं मानसिक विभिन्नता हीं शिक्षा के क्षेत्र में वैयक्तिक भिन्नता की प्रवृत्ति (concept) को शामिल करती है। इनकी जानकारी से शिक्षकों को बच्चों की योग्यता, ईच्छा, मनोवृत्ति, अभिक्षमता और व्यक्तित्व की पहचान होती है, जिसकी सहायता से बच्चों के भविष्य को संवांरने का कार्य कर सकते हैं। उनकी अभिक्षमता को मापकर अभ्यास के द्वारा किसी भी विषय में प्रवीण बना सकते हैं।

मॉडल प्रश्न (Model Questions)

1. वैयक्तिक भिन्नता के अर्थ एवं स्वरूप का वर्णन कीजिए। एक शिक्षक के लिए इसकी क्या उपयोगिता है।
   (Explain the meaning and nature of individual differences. What are their implications for the teacher.)
2. वैयक्तिक भिन्नता के प्रमुख क्षेत्रों का वर्णन कीजिए.।
   (Discuss the major areas of individual differences.)
3. वैयक्तिक भिन्नता के प्रमुख कारण क्या है? उचित उदाहरण देकर इसकी समीक्षा कीजिये।
   (Explain major areas of individual differences. Give suitable examples.)
4. 'वैयक्तिक विभिन्नता अनुवांशिकता एवं वातावरण कारकों के बीच की प्रतिक्रिया है। इस कथन की पुष्टि कीजिए।
   ('Individual differences are interaction between heredity and environment', examine this statement.)
5. निम्नलिखित किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखें—
   (Write short notes on any two)
   (a) वैयक्तिक भिन्नता का शिक्षा में स्थान
   (Importance of individual differences in education)
   (b) अभिक्षमता में भिन्नता **(Difference in Aptitude)**
   (c) मूल्यों में भिन्नता **(Difference in values)**
   (d) वैयक्तिक भिन्नता की परिभाषा **(Definition of individual differences)**